सर्च फॉर लॉस्ट बर्ड्स

विलुप्त जेरडॉन कॉर्सर का मिलना, खो जाना और फिर एक नया सुराग

संकेत राउत

'सर्च फॉर लॉस्ट बर्ड्स' नामक सूची अमेरिकन बर्ड कंज़र्वेन्सी द्वारा संयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास है। इस सूची में वे पक्षी शामिल किए जाते हैं जिनकी कम-से-कम दस वर्षों से कोई पुष्टि नहीं हुई हो। इस सूची में भारत से शामिल प्रजातियों में से एक है जेरडॉन कॉर्सर *(Rhinoptilus bitorquatus)* जिसकी अन्तिम उपस्थिति वर्ष 2008 में दर्ज हुई थी।

संदर्भ अंक-155 (नवम्बर-दिसम्बर, 2024) में प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ भारत भूषण का लेख 'समय के गहरे अँधेरे से निकली एक चिड़िया' प्रकाशित किया गया था। यह लेख उनके व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित था जिसमें उन्होंने सन् 1986 में श्री लंकामल्लेश्वर वन्यजीव अभयारण्य में जेरडॉन कॉर्सर की पुनः खोज की रोमांचक घटना का वर्णन किया था। दरअसल, इस घटना से पहले वर्ष 1900 के बाद से जंगल की गहराइयों में छिपा जेरडॉन कॉर्सर लगभग विलुप्त ही माना जा रहा था।

सन् 1986 में पुनः खोज के बाद कुछ वर्षों तक तो जेरडॉन कॉर्सर की उपस्थिति दर्ज होती रही लेकिन सन् 2008 के बाद से इसके बारे में कोई भी विश्वसनीय जानकारी सामने नहीं आई।

शोधकर्ताओं और पक्षी प्रेमियों ने अनेक अभियानों के माध्यम से जेरडॉन कॉर्सर को खोजने की कोशिश की लेकिन इसे जंगल में ढूँढना भी तो आसान नहीं है। भूरे रंग की छटा इसे झाड़ियों में अदृश्य-सा बना देती है। साथ ही, इसके निशाचर होने और छुपकर रहने की आदत के कारण इसकी खोज और भी कठिन हो जाती है। यहाँ तक कि अत्याधुनिक उपकरणों के बावजूद इसे खोजा नहीं जा सका और हर असफल प्रयास के बाद यह सवाल भी गहराता गया कि यह पक्षी अब कहीं जीवित बचा भी है क्या?

फिर भी, खोज का सिलसिला थमा नहीं। जब श्री लंकामल्लेश्वर अभयारण्य के भीतर जेरडॉन कॉर्सर का कोई सुराग नहीं मिला, तो पक्षी विशेषज्ञों ने पहली बार अभयारण्य के बाहर सम्भावित आवास क्षेत्रों में अभियान चलाने का निश्चय किया। हरीश थंगराज, शशांक दळवी, आदेश शिवकर, रोनिथ उर्स और प्रणव ने मिलकर जुलाई-अगस्त, 2025 में विशेष खोज अभियान की तैयारी की और अगस्त के अन्तिम सप्ताह में अभियान शुरू किया।

आश्चर्यजनक रूप से, अभियान के पहले ही दिन की वह सुबह इतिहास बन गई, जब 16 साल से गुमशुदा जेरडॉन कॉर्सर की आवाज़ फिर से सुनाई दी। इस आवाज़ को रिकॉर्ड करके, इस पक्षी की उपस्थिति की पुष्टि की गई। यह वही पक्षी था जो पिछले 16 वर्षों से शोधकर्ताओं और पक्षीप्रेमियों की नज़रों से ओझल था। लेकिन प्रकृति हमें हमेशा चौंकाती है। इस ध्वनि ने एक बार फिर जेरडॉन कॉर्सर के जीवित होने की गवाही दी।

गौरतलब है कि सन् 2008 तक जेरडॉन कॉर्सर की उपस्थिति केवल श्री लंकामल्लेश्वर अभयारण्य के भीतर ही दर्ज की गई थी। लेकिन अब लगभग 125 वर्षों बाद, पहली बार अभयारण्य के बाहर इस पक्षी की मौजूदगी का अप्रत्यक्ष सुराग मिला है। अप्रत्यक्ष इसलिए क्योंकि अभी भी उसे देखा नहीं गया है, केवल विशिष्ट

आवाज़ रिकॉर्ड करके मैच की गई है।

जेरडॉन कॉर्सर जैसी दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण के लिए उन्हें खोजकर दर्ज करना ज़रूरी है। अब जब इसकी उपस्थिति का प्रमाण मिल चुका है, तो इसके संरक्षण की दिशा में ठोस प्रयास शुरू किए जा सकते हैं। और इसलिए ऐसी खोजबीन अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

गायब-सा हो चुका एक पक्षी जब अचानक सामने आता है तो वह सिर्फ एक खोज नहीं, बल्कि उम्मीद की किरण बन जाता है। *संदर्भ* में छपा वह लेख ऐसी उम्मीद बरकरार रखने का कार्य करता है। संयोगवश, *संदर्भ* में पिछले साल यह लेख छपने के महज़ एक साल के भीतर ही जेरडॉन कॉर्सर की पुनः खोज की गई।

किसी भी जगह-विशेष से किसी पक्षी का मिलना, खो जाना या लुप्त होना प्रमुखत: वहाँ की पारिस्थितिकी में होने वाले बदलावों पर निर्भर करता है। इन बदलावों का सीधा असर इन्सान पर भी पड़ता है। इन दोनों वजह से बहुत ही ज़रूरी है कि ऐसी खोजबीन लगातार जारी रहे।

जेरडॉन कॉर्सर की पुनः खोज एक उपलब्धि है जो न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के उन शोधकर्ताओं और प्रकृतिप्रेमियों के लिए उत्साहवर्धक है, जो वर्षों से लुप्तप्राय पक्षियों की खोज में लगे हुए हैं। इस खोज ने यह साबित किया है कि प्रकृति के रहस्य अभी भी अनगिनत हैं और उन्हें जानने के लिए धैर्य, जुनून और लगातार प्रयास ज़रूरी हैं।

तो हमें शिद्दत से अन्य गुमनाम जीवों की खोज करते रहने की ज़रूरत है, क्योंकी जेरडॉन कॉर्सर की पुनः खोज हमें याद दिलाती है – जब तक उम्मीद ज़िन्दा है, प्रकृति हमें चमत्कार दिखाती रहेगी।

संकेत राउत: वन्यजीव प्रेमी हैं तथा वन्यजीव अध्ययनों में भाग लेते रहते हैं। पक्षी और तितलियाँ रुचि के मुख्य क्षेत्र हैं। जंगली जानवरों के बारे में पढ़ने में और उनके व्यवहार का विश्लेषण करने में आनन्द आता है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं और शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य करते हैं।

सन्दर्भ: यह लेख BirdLifeInternational (birdlife.org/news) की वेबसाइट पर 10 सितम्बर, 2025 को प्रकाशित लेख Glimmer of Hope: Sought After Lost Bird Rediscovered in India पर आधारित है।